



# Ashwa Samachar

## अश्व समाचार

Volume 36, April 2019-September 2019; Brooke India (BI) Newsletter

## Building Resilience – Formation of Women EWG group in Ambala

Brooke India through its community intervention has facilitated formation and strengthening of Community Based Organisations, Equine Welfare Groups (EWGs), Associations & Federations) for sustainably improving animal welfare and building self-reliant communities. EWGs have been instrumental in uplifting the financial status of women and indirectly contributing to improvement in the care of working equine.



Jasvir Kaur from Ambala, Haryana is an example of a homemaker who has benefitted from the unity and strength of a women's EWG. The only source of income for Jasvir and her family of five, was through transportation of bricks in Brick Kilns (BK), with the help of their mare.

BI field staff reached out to her and some other women. They spoke about the benefits of monthly savings through EWGs and overall equine welfare. In contrast to other women, Jasvir showed eagerness and enthusiasm to form an all women EWG.

*"It was important for me to help women in my community improve their financial condition, and be empowered, but they were not ready. They were afraid of what will people in our community say, especially the men." - Jasvir Kaur, equine owner, Ambala*

The regular discussions and meetings held by the BI team helped her build confidence in other women of equine owning community, which led to the formation of first women's EWG in the Ambala region.

Jasvir is currently heading two women's EWG group, each consisting of 13 women members. Her meeting with representatives of Haryana Rural Livelihood Mission resulted in the formation of two more EWG groups. Currently, there are three women's EWGs and a male EWG in Ambala region.

BI staff has helped these EWGs to establish linkages with financial institutions and trained Animal Health Providers (AHPs).

Holding onto to her determination, Jasvir Kaur wishes to build women's EWGs in all the villages of Ambala, so that awareness regarding equine care can reach as far as possible and women too have a livelihood source of their own ■

*"Mana ek aurat kuch badlaav nahe la sakti par 10 mil ke toh la sakti hain", (one woman might not be able to bring change but ten women can) – Jasvir Kaur*

## Results for Static Equine Population

59491

Community led  
vaccination  
against tetanus

29950

Community led  
deworming of equids

160 | 342

Men Women  
Formation of Equine  
Welfare Groups

6572

Treatment by Animal  
Health Providers  
(AHPs)

## महिलाओं में बढ़ती आत्मनिर्भरता – अम्बाला में महिला अश्व कल्याण के समूह का गठन

कई महिलाओं के जीवन में वित्तीय परिवर्तन लाने में अश्व कल्याण समूह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनकी आय का एकमात्र स्रोत ईंट भट्टों में घोड़ी बुग्गी की मदद से ईंटों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना है। बढ़ी हुई आय के कारण अश्व प्रजाति के पशुओं का बेहतर ख्याल रखा गया है। अंबाला, हरियाणा की गृहिणी जसवीर कौर, एक उदाहरण हैं, जिन्होंने एक महिला अश्व कल्याण समूह की एकता और ताकत का लाभ उठाया। उनके परिवार में पांच लोग हैं (पति और उनके चार बच्चे) और उनकी आय का एकमात्र साधन उनकी घोड़ी है।

अपने समकक्षों के साथ भावनात्मक जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए विल्ड्रन आर्ट प्रतियोगिता की व्यवस्था करते हुए, ब्रुक इंडिया के फील्ड स्टाफ ने जसवीर कौर से संपर्क किया। ब्रुक की टीम ने अश्व कल्याण और अश्व कल्याण समूह को सशक्त बनाने के बारे में चर्चा आयोजित की। महिलाओं को हमेशा से अतिरिक्त आय अर्जित करने की इच्छा थी, लेकिन पारिवारिक स्थितियों के कारण वह आगे आने में संकोच करती थीं।

जसवीर कौर ब्रुक की टीम से लंबे समय तक दृढ़ता के बाद अश्व कल्याण समूह बनाने वाली अंबाला क्षेत्र की पहली महिला बनीं। उन्होंने अपने समुदाय की महिलाओं के साथ काम किया और अपने साक्षात्कार में अश्व कल्याण समूह के निर्माण के महत्व के बारे में बताते हुए कहा

“मेरे लिए यह महत्वपूर्ण था कि मैं अपने समुदाय की महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद करूँ, वे डरती थी कि हमारे समुदाय के लोग क्या कहेंगे, खासकर पुरुष।” – जसवीर कौर

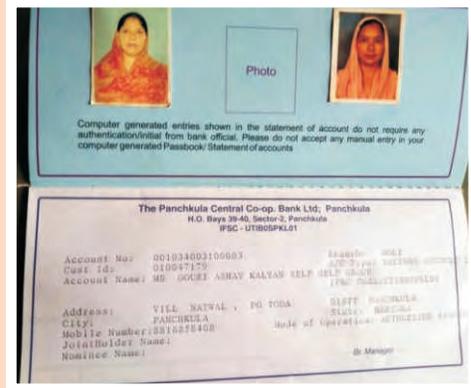
महिलाओं के कल्याण के लिए अतिरिक्त आजीविका के विकल्प तैयार करने पर और अश्व कल्याण की चर्चा करने से समूह सदस्यों के बीच विश्वास पैदा करने में मदद मिली।

जसवीर कौर अपनी मान्यताओं को साझा करते हुए कहती हैं “माना अकेली औरत कुछ नहीं कर सकती पर दस महिलाएं मिल जाये बदलाव ला सकती हैं।”

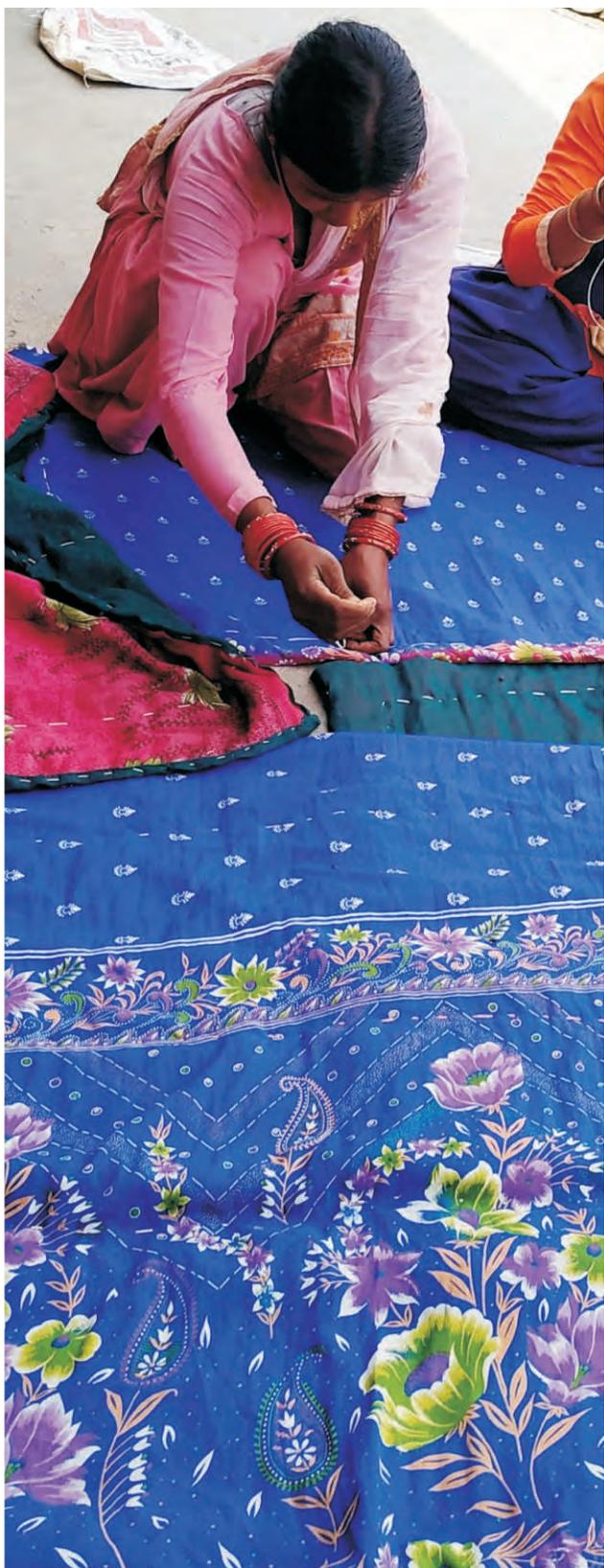
आज, जसवीर कौर 13 महिलाओं वाले दो अश्व कल्याण समूह का नेतृत्व कर रही हैं। इसके अलावा, समूह की अन्य महिलाओं के साथ उनकी हरियाणा ग्रामीण आजीविका मिशन के प्रतिनिधियों के साथ भी बैठक हुई। इस बैठक के परिणामस्वरूप, दो और अश्व कल्याण समूहों का गठन हुआ है। अंबाला क्षेत्र में निम्नलिखित कुल चार अश्व कल्याण समूह हैं।

- गौरी अश्व कल्याण समूह – नटवाल (महिला)
- एकता अश्व कल्याण समूह – नटवाल (महिला)
- श्री दक्ष अश्व कल्याण समूह – ककराली (महिला)
- रविदास अश्व कल्याण समूह – तोड़ा (पुरुष)

ब्रुक स्टाफ ने अश्व कल्याण समूह को बैंक और स्थानीय स्वास्थ्य प्रदाताओं के साथ संपर्क स्थापित करने में मदद की। अपने दृढ़ संकल्प के साथ, जसवीर कौर अम्बाला के सभी गांवों में अश्व कल्याण समूह का निर्माण करना चाहती हैं, ताकि जहां तक संभव हो सके अश्व कल्याण के विषय में जागरूकता पहुंच सके एवं अन्य महिलाओं को अतिरिक्त आजीविका के अवसर मिल सकें।



## Best Out of Waste - Saddle Cushioning Mattress for Working Equines



Even with no formal education, Prema Devi, a 28-year-old equine owner from Bhandari Village, Uttarakhand was able to help other womenfolk in the village to overcome the financial troubles through the formation of a women's EWG.

Prema was disturbed by the fact that, for all her monetary needs she was totally dependent on her husband, and so was the plight of many women in her village. She took inspiration from the men's EWG and thought of starting an all-women's EWG.

Prema's hard work and dedication, paved way for the formation of "Gusain Dev" EWG in January 2019. Each member of the group decided to contribute INR 200 (£ 2 approx.) on a monthly basis.

Once the group was fully functional, Prema started looking for business opportunities. A suggestion made by the BI team for making use of old clothes, rags and locally available raw material for producing low cost mattresses for equines, showed the next direction to Prema.

With her zeal to achieve her goals, she stitched 34 cloth mattresses. Within a short span of time, all 34 mattresses were sold to equine owners. A part of the profit earned by this group was later used for buying medicines and vaccines for their equines.

**"I feel empowered, confident and self-sufficient and I am happy that collectively we were all able to reduce pain and suffering of our working animals". – Prema Devi**

Now, Prema's next endeavour is to get women EWG in Bhandari village linked with various bank schemes, and get access to institutional credits for income generation. This will further lead to the development of equine owning community ■



## कामकाजी अश्वों के लिए अनुपयोगी चीज़ों से बनाये गद्दे

भंडारी गाँव, उत्तराखंड की एक पितृ सत्तात्मक स्थापना में, जहाँ महिलाओं से आम तौर पर निर्णय लेने में सलाह नहीं ली जाती हैं, 28 वर्षीय प्रेमा देवी, पशु कल्याण और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए महान प्रयास कर रही हैं। औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद, प्रेमा गाँव में अन्य महिलाओं की मदद करने में समर्थ थी, उन्होंने महिला अश्व कल्याण समूह के गठन किया ताकि धन संबंधी परेशानियों को दूर किया जा सके।

अपनी प्रारम्भिक कठिनाईयों को साझा करते हुए प्रेमा ने बताया “जिस समय मुझे महसूस हुआ कि सभी आर्थिक रूप से मैं पूर्णतः अपने पति पर निर्भर थी और यही स्थिति गाँव की अन्य महिलाओं की भी थी। मैंने हताश होकर अन्य तरीके तलाशने शुरू किये। प्रेमा ने बताया आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में कदम उठाने की प्रेरणा, उसे पुरुषों के अश्व कल्याण समूह से मिली। अतः इंटर लोनिंग के माध्यम से मुनाफा कमाने के तरीकों के बारे में अधिक जानने की उत्सुकता में ब्रुक पार्टनर मैनेजर ललित से भी मिली और एक महिला अश्व कल्याण समूह बनाने में अपनी रुचि भी व्यक्त की।



समुदाय के बुजुर्गों को मनाने और प्रेमा की कड़ी मेहनत और समर्पण के परिणाम स्वरूप कारण, “गुसाई देव” अश्व कल्याण समूह आखिरकार जनवरी 2019 में भंडारी गाँव में आरंभ हुआ। समूह के प्रत्येक सदस्य ने मासिक आधार पर 200 रुपये (₹ 2 लगभग) योगदान करने का फैसला किया। अन्य अश्व कल्याण समूह की तुलना में यह एक बड़ी राशि थी।

जब समूह चरमोत्कर्ष पर था, प्रेमा ने व्यवसाय के अवसरों की तलाश शुरू कर दी। अश्व कल्याण समूह के साथ संसाधन मानचित्रण पर एक सामुदायिक सत्र के दौरान, जब यह चर्चा हो रही थी कि घोड़े की नाल, काठी, गद्दे जैसी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए भंडारी गांव से 35 किलोमीटर दूर बागेश्वर शहर तक यात्रा करनी पड़ती है तब पुराने कपड़े, लत्ते और स्थानीय रूप से उपलब्ध माल को लागत में लाकर कम लागत वाले गद्दे का उपयोग करने का सुझाव दिया गया।

प्रेमा ने प्रेरित होकर यह सुझाव एक व्यावसायिक योजना में बदल दिया। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उसने जोश और जुनून के साथ, 34 कपड़े के गद्दे सिल दिए और स्थानीय पशु संसाधन केंद्र के समर्थन से उन्हें बेचने की कोशिश की। थोड़े ही समय में उसके सारे गद्दे बिक गए। प्रेमा ने जो लाभ कमाया, उससे प्रेरित होकर अन्य महिलाओं ने भी अश्व कल्याण समूह की सदस्यता ली।

इस समूह द्वारा अर्जित किए गए लाभ को अश्व प्रजाति के पशुओं की दवा और टीकाकरण पर खर्च किया गया।

**“मैं सशक्त, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर महसूस करती हूँ और मुझे खुशी है कि सामूहिक रूप से हम सभी अपने काम काजी अश्व प्रजाति के जानवरों के दर्द और पीड़ा को कम कर सके”। – प्रेमा देवी**

आस पास के क्षेत्रों को भी प्रेमा के बनाये गद्दों की जानकारी पहुँची। नए सूती गद्दों के आने से बहुसंख्यक कामकाजी जानवरों को, खटमल के घावों और मक्खी के संक्रमण, जो नदी के किनारे काम करने वाले खच्चरों के बीच था, से बचाया जा सका।

प्रेमा का अगला प्रयास भंडारी गाँव की महिलाओं को विभिन्न बैंक योजनाओं से जोड़ने के लिए प्रेरित करना है, जो उनकी आर्थिक स्थिति और मजबूत कर सके। आय सृजन की अन्य गतिविधियों, जैसे कि मुर्गी पालन और बकरी पालन के विस्तार के लिए संस्थागत ऋण प्रदान कर सकती है। संभावित है कि यह अश्व पालक समुदाय का विकास करेगा।

## 55-Year-Old Dhan Devi Fight Odds to Empower Equine Owners in Shahjahanpur



Dhan Devi, a 55-year old woman from Palhora village in Shahjahanpur, after the death of her husband, was living a life in despair. Struggling with poverty and the burden of rearing five children all alone, made her work as a brick moulder.

Reeling under acute poverty, Dhan Devi needed another means to earn some more money. BI's Community Mobilizer, Dharmendra, introduced Dhan Devi to the benefits of Self Help Groups like EWGs and workings of inter loaning method. The BI team also fully trained and equipped these EWGs to manage equine hygiene and health in a better way.

Dhan Devi took the initiative of building a women's EWG in her own village. She began interacting with her neighbours and was able to gather 10 women to form the group. Each contributing INR 50 (£0.53) per month and together named their group as "Ram women's EWG". The group also started their own livelihood venture of making paper bags out of old newspaper. Further, they also spread the information about EWGs in and around their village, which led to the formation of six similar EWGs in Shahjahanpur.

**"From ages, our community had been suffering due to poverty and ignorance and I thought I can change this by bringing together equine owners and forming a bigger group, and then raising demands in front of the local administration". – Dhan Devi**

Further, Dhan Devi also facilitated the formation of an Association of Women's EWGs comprising of 60 members. With the help of this Association, they raised demands of better health care services for the malnourished children and equines in their village. Subsequently, 52 women and men were registered with the labour department to avail benefits of various government schemes ■



### Results for Migratory Equine Population

1722

Treatment by  
Animal Health Practitioners (AHPs)

575

First Aid Kit (FAK) Installations

## 55 वर्षीय धन देवी ने शाहजहांपुर में अश्व पालकों को सशक्त करने के लिए कठिन संघर्ष किया

शाहजहांपुर के पल्होरा गाँव में हमारे एक सामुदायिक सत्र के दौरान, ब्रुक टीम ने एक 55 वर्षीय महिला धन देवी से मुलाकात की, जो अपने पति की मृत्यु के बाद निराशा में जीवन व्यतीत कर रही थी। गरीबी और अकेले 5 बच्चों के पालन-पोषण के बोझ ने उसे ईंट भट्टे पर काम करने के लिए मजबूर कर दिया था। हालाँकि, उनके बड़े बेटे ने काम करने वाले दो घोड़ों की मदद से कुछ पैसे कमाने की कोशिश की, उसने बुग्गी चलाना शुरू कर दिया, जिस पर वह यात्रियों के साथ साथ समान भी ढोया करता था।



धन देवी और उनके बेटे, के संयुक्त प्रयास, परिवार को सक्षम बनाये रखने में मदद कर रहे थे, लेकिन यह उनके परिवार के कल्याण के लिए पर्याप्त नहीं था, जिसमें अश्वों का रख रखाव भी शामिल था। धन को कुछ और पैसे कमाने की जरूरत थी और ब्रुक टीम के सामुदायिक प्रेरक, धर्मेन्द्र ने उन्हें इंटर लोनिंग पद्धति की शुरुआत के माध्यम से एक मौका प्रदान किया। ब्रुक टीम द्वारा प्रदान किए गए आवश्यक प्रशिक्षण और अन्य गांवों के संपर्क में आने के बाद जहां अश्व कल्याण समूह पहले से ही कार्य कर रहे थे, धन देवी ने अपने गाँव में एक महिला अश्व कल्याण समूह के निर्माण की पहल की। इस विषय में उन्होंने अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत की, और धीरे-धीरे, 10 महिलाओं का एक समूह बनाने में सक्षम हो गईं। उनमें से प्रत्येक ने प्रति माह 50 रुपये का योगदान दिया, और एक साथ अपने समूह को "राम महिला अश्व कल्याण समूह" नाम दिया।

कुछ समय बाद, जब समूह ने अपनी जड़े पूरी तरह से जमा ली, समूह ने अतिरिक्त आय अर्जित करने के लिए इंटर लोनिंग से लाभ अर्जित करने का प्रयास कर सक्षम हुए। समूह की महिलाओं ने पुराने अखबारों से पेपर बैग बनाने का अपना उद्यम शुरू किया, शुरुआत में धन देवी का उद्देश्य अतिरिक्त नकद अर्जित करना था, लेकिन "राम महिला अश्व कल्याण समूह" के गठन ने उन्हें अपनी एकता की ताकत का एहसास कराया। धन देवी ने एक नेता की भूमिका निभाई और अपने समूह की ऊर्जा को बड़े लक्ष्यों की ओर बढ़ाया। वे पूरी तरह से सुसज्जित थे और विभिन्न तरीकों से प्रशिक्षित किए गए थे जिससे कि वे स्वच्छता और स्वास्थ्य का प्रबंधन कर सकें। अपने ज्ञान का उपयोग करते हुए, उन्होंने अन्य समुदाय के सदस्यों के बीच अश्व कल्याण के बारे में बताने की पहल की, जिसके कारण शाहजहांपुर में 6 अलग-अलग अश्व कल्याण समूहों का गठन हुआ और साथ ही, परोक्ष रूप से समुदाय के लिए काम करने वाले अश्वों का कल्याण भी अग्रसर हुआ।

भले ही धन देवी की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी, वह वास्तव में अच्छी तरह से जानती थी कि नेता निर्णय निर्माताओं की भूमिका को कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते हैं और यह उनके लिए महत्वपूर्ण था कि वे अपने हर कदम पर अपने समूह के सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करें। साथ में, उन्होंने ब्रुक टीम द्वारा शुरू की गई पार्टिसिपेटरी वेलफेयर नीड एसेसमेंट (पी डब्ल्यू एन ए) टूल का इस्तेमाल किया, यह एक चरणबद्ध प्रक्रिया, जो अश्व मालिकों को अपने अश्वों के अनुपात अनुसार दाना पानी, सही रख रखाव, नाल लगवाना, बाल काटना और अश्व के स्वास्थ्य की स्थिति को समझने में मदद करता है।

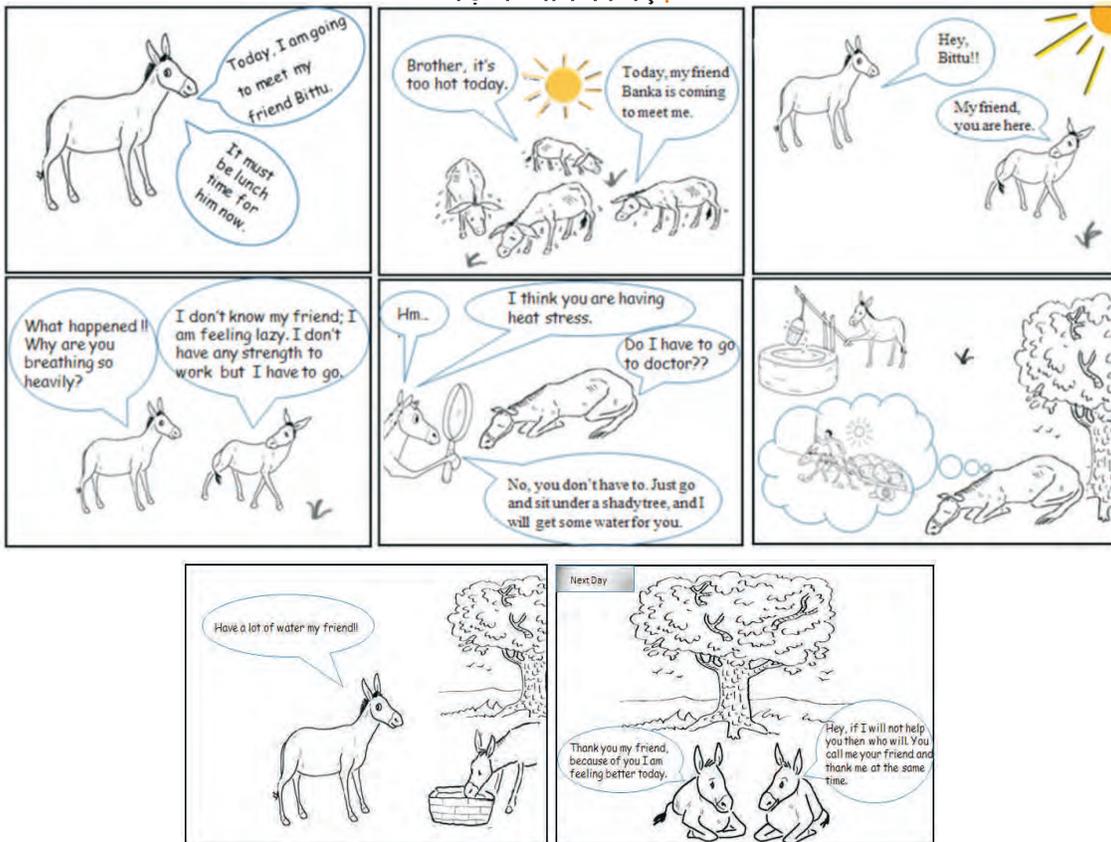
**"सालों से, हमारा समुदाय गरीबी और अज्ञानता के कारण पीड़ित था। मुझे लगता था कि मैं सभी को एक साथ लेकर और एक समान मालिक बना कर एक बड़ा समूह बना सकती हूँ। इससे स्थानीय प्रशासन के सामने अपनी समस्याओं के समाधान की मांग उठा सकती हूँ।" – धन देवी**

शाहजहांपुर में सम-विषम समुदाय की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए, धन देवी ने 60 महिला अश्व कल्याण समूह की एसोसिएशन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संघ की मदद से उन्होंने कुपोषित बच्चों के लिए बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने की माँग उठाई और विभिन्न सरकारी योजनाओं के रूप में लाभ उठाने के लिए श्रम विभाग के साथ 52 महिलाओं और पुरुषों को शामिल किया।

## बिट्टू और बंका की यारी Bittu and Banka - the Friends



यदि आपका गधा/खच्चर आपको होंकता हुआ दिखाई दे, तो उसे बंका की तरह खूब सारा पानी पिलाये, और छायादार पेड़ के नीचे बिठाएँ।



If you observe your donkey/horse/mule breathing heavily, then provide water, shade and give it a bath. ■

## BI Efforts at Equine Fairs

The BI Training & Extension Team (T&ET) comprises of

- Veterinarian
- Master Trainers Animal Health (MTAH)
- Master Trainer Farriery (MTF)
- Master Trainer Community Engagement (MTCE)

The BI T&ET covers approximately 68 equine in a year across the country.

The aim of the team is to spread awareness regarding good management practices, equine diseases and provide emergency treatment to sick and injured equines.

### Equine Welfare Workshop with Equine Fair Owners

On July 4, 2019, the BI T&ET organised a workshop for the equine fair owners/organisers. The objective of the workshop was to identify through a consultative process, the basic needs of equine and equine owners visiting the fair. At the end of the workshop, owners agreed to take certain steps to improve equine conditions at the fair.

#### Action Points:

- Availability of adequate clean drinking water.
- Arrangement of shelters for the equines
- Planting trees to provide relief during summers.
- Building ramps for loading and unloading the animals.
- Availability of nutritious fodder for equines.
- Availability of professional hair clippers.
- Arrangement of grooming facility for equine
- Availability of adequate medical facilities for the equine
- Maintaining cleanliness at the equine fair.
- Availability of electricity and lights at night.
- Proper food arrangement for the equine owners/traders.
- Proper washrooms and bathing facility for equine owners/traders
- Availability of saddlery items.
- Proper security for equine owners/equines at the fairs ■

## कविता : थुलाई मेला पशुओं का मेला

थुलाई मेला पशुओं का मेला है  
एक दो पशु नहीं हजारों का मेला है  
पशु मालिकों से निवेदन है  
पशु को बार बार पानी पिलाएँ  
ब्रुक इंडिया आ गयी है उन्हें अपने पशु दिखाये  
पशु मालिकों से निवेदन है  
गंदगी न होने दे खुर की करें सफाई  
अश्व कल्याण पर सलाह देने ब्रुक इंडिया आई  
मानो मेरी बात ओर मिल कर आओ भाई  
ब्रुक इंडिया के लिए सबसे बढ़कर  
अश्व कल्याण मेरे भाई ।

– सुनेहरी लाल नेताजी, सलीमपुर, हाथरस



## Equine Welfare Workshop with Equine Fair Owners



Spreading Awareness Through Play – Siyanand's Innovative Idea for Engaging Stakeholders

Meet Siyanand! BI's Master Trainer – Community Engagement, at equine fairs.

Under the guidance of Dr. Vijay Malla, Team Leader Training and Extension (Equine Fair) Siyanand created an interesting and attention-grabbing game for the traders and owners. The game is named as "Aao Khelo or Jeeto", loosely translated as "Play and Win". The concept of this game is to spread awareness regarding diseases such as colic, surra, tetanus, heat stress etc.

The Equine fair is a busy time for the traders as well as equine owners, thus it becomes a challenge to build relationship with people and carry out prolonged activities.

The moment 10-15 people are gathered in BI's camp, Siyanand helps them sit comfortably and then begins the game with a catch line "Chaliye apke bachpan ki kuch yaadein taaza karein", which means, "Let's revive some of your playful childhood memories".

Such playful interaction leads to enthusiastic participation by the equine owners and traders and a positive acceptance of the knowledge. The participants help generate a ripple effect for spreading the information to other equine owners and traders.

To further support and other BI TLET members, it is planned to review existing Information Education Communication (IEC) material and develop innovative community engagement models for wider dissemination. As the Equine Fair season gathers momentum, the BI TLET will then be able to focus on community engagement in a better way than it was done earlier ■



## नई पद्धति से सियानन्द ने दी खेल-खेल में साझेदारों को जानकारी

ब्रुक इंडिया एक्सटेंशन टीम को मेला टीम के रूप में भी जाना जाता है, लगभग 68 अश्व प्रजाति के मेलों को कवरेज प्रदान करने का प्रस्ताव करता है। इस टीम में एक पशुचिकित्सा, दो मास्टर ट्रेनर-पशु स्वास्थ्य, मास्टर ट्रेनर-फार्मिएर, मास्टर ट्रेनर - कम्युनिटी इंगेजमेंट (सी. ई), और एक पशु चिकित्सा सहायक और एक गाड़ी चालक शामिल हैं। वे मेलों में अच्छे प्रबंधन प्रथाओं और विभिन्न घातक बीमारियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं और आपातकालीन स्थिति में घाव और बीमारी के लिए उपचार प्रदान करते हैं। ब्रुक इंडिया टीम के प्रभावी स्तर को और मजबूत करने के लिए, सियानंद को मार्च में एक मास्टर ट्रेनर - कम्युनिटी इंगेजमेंट के रूप में नियुक्त किया गया था। जैसा कि सियानंद पहले ब्रुक इंडिया के साथ कम्युनिटी इंगेजमेंट के रूप में कार्यरत थे इसी लिये वह मेला टीम के लिए अंजान नहीं थे।



ब्रुक इंडिया के लिए अपने उत्साह के बारे में बताते हुए, सियानंद कहते हैं, "मैंने हमेशा यहाँ टीम के साथ एक करीबी रिश्ता महसूस किया है और जिस तरह से मुझे घोड़ों के लिए काम करने से संतुष्टि मिलती है, वह किसी अन्य कार्य में नहीं मिल सकती।

डॉ. विजय मल्ला के मार्गदर्शन में, सियानंद ने मेलों में व्यापारियों और मालिकों के लिए एक दिलचस्प और ध्यान आकर्षित करने वाला खेल भी बनाया। खेल को "आओ खेलो और जीतो" के रूप में नामित किया गया, जिसे "प्ले एंड विन" के रूप में अनुवादित किया गया है। इस खेल की अवधारणा को कोलिक, सर्वा, टेटनस, गर्मी में तनाव जैसे रोगों के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

भले ही सियानंद को ग्रामीण स्तर पर पशु मालिकों के साथ बैठक और संवाद करने का एक बड़ा अनुभव है, लेकिन अश्व पालकों को इन मेलों में जागरूक करने के लिए आकर्षित करना आसान नहीं है। जिस उद्देश्य के साथ अश्व समुदाय के लोग मेलों में आते हैं और वह उनके रोजगार के साथ जुड़ा हुआ है, सियानंद को सतर्क रहना पड़ता है और लोगों को अत्यधिक उत्साह के साथ संलग्न करना पड़ता है, ताकि ये खेल सभी को अर्थपूर्ण व सार्थक लगे।

सियानंद समुदाय के लोगों को समूह के उद्देश्य को याद दिलाते रहते हैं जिससे वे जागरूक रहे और उद्देश्य को पूरा कर सकें। 5-10 दिनों की सीमित समयावधि भी इन मेलों में एक चुनौती बन जाती है। यहाँ कम समय में अश्व समुदाय पर प्रभाव डालने की जरूरत होती है।

इस समस्या के समाधान के रूप में, सियानंद मेले में मौजूद हितधारकों के साथ जान पहचान बनाने के लिए ट्रांजेक्ट वॉक का उपयोग करते हैं। मेले के चारों ओर चलने के दौरान, अश्वों के स्वास्थ्य और बीमारी के बारे में सरल प्रश्न पूछते अथवा बीमार पशु की जाँच के लिए उसे ब्रुक के कैंप पर ले जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

जब ब्रुक के कैंप पर 10-15 लोग इकट्ठा होते हैं, सियानंद उन्हें आराम से बैठने में मदद करते हैं और फिर खेल शुरू करते हैं एक ध्यान आकर्षित करने वाली बात के साथ "चलिए आपके बचपन की कुछ यादें ताजा करें"।

अगली चीज जो हम इसके बाद देखते हैं, वह है कि सभी व्यापारी उत्साहपूर्वक खेल में भाग ले रहे हैं जिससे ज्ञान की एक सकारात्मक स्वीकार्यता होती है। मेलों में सियानंद की भूमिका में शिविर में सूक्ष्म पहल में टीम को सहायता प्रदान करना शामिल है, जैसे मिश्रित फीड, घोड़ों के साज, बाल काटने की मशीन, और मक्खी भगाने के लिए मोहरे की बिक्री, आदि शामिल है।

सियानंद का समर्थन करने के लिए, डॉ. विजय मल्ला मौजूदा आइ. ई. सी. सामग्री की समीक्षा करने और व्यापक प्रसार के लिए नवीन सामुदायिक सहभागिता मॉडल विकसित करने की योजना बना रहे हैं। डॉ. विजय का कहना है, मेला टीम अब पहले की तुलना में बेहतर तरीके से सामुदायिक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित कर पाएगी और इन मेलों में काम करने के लिए परिस्थितियों को बेहतर बनाने की दिशा में काम करेगी और उन लोगों को राहत देगी जिन्हें सबसे अधिक सहायता की आवश्यकता है।

## Interview of Sadhna

### एक मुलाकात साधना के साथ

Sadhna, and her family of six along with the Nath community travel to all equine fairs, in and around Uttar Pradesh and Rajasthan. The Nath community are traditionally breeders and traders, and usually establish their settlements near water sources and on unused lands. They breed mules, rear them for about two years, and then sell them. In each fair, they trade around 10 mules for INR 10000-20000 each (£ 108.91 - £ 217.82). Sadhna too brought 10 mules with her to this year's Thulai Fair.

During an interaction with the BI team, she shared some of the mule related health issues commonly experienced by her community. When asked what exactly happens to her mules, she explained that their eyes roll backward and after few

साधना अपने पति और 5 बच्चों (तीन बेटियों और दो बेटों) के साथ, और अपने नाथ समुदाय के लोगों के साथ उत्तर प्रदेश और राजस्थान के लगभग सभी मेलों की यात्रा करती है। नाथ समुदाय आमतौर पर जल स्रोत के पास अनुपयोगी भूमि पर अपनी बस्तियां स्थापित करता है। यह समुदाय प्रजनकों का समुदाय है, वे खच्चरों का प्रजनन करते हैं और उन्हें लगभग दो साल तक पालते हैं। खच्चर के समर्थ होने पर वे उसे व्यापार के लिए मेले में ले जाते हैं।

प्रत्येक मेले में वे लगभग 10 खच्चरों का 10000-20000 रुपये में व्यापार करते हैं। थुलई मेले में साधना अपने साथ 10 खच्चर भी लाई थी। उसने बताया कि पशुओं में कुछ सामान्य स्वास्थ्य समस्याएं हैं जो समुदाय द्वारा खच्चरों के बीच अनुभव की



जा रही हैं। जब उनसे पूछा गया कि उनके खच्चरों के साथ वास्तव में क्या होता है, तो उन्होंने बताया कि उनकी आँखें पीछे की ओर घूमती हैं और कुछ दिनों के बाद वे कमजोर होकर मर जाते हैं।

बुक इंडिया टीम के सदस्यों ने इस बीमारी की पहचान सर्रा के रूप में की। साधना इस बात से अनजान थी कि जल स्रोत के आसपास रहने वाले अश्व प्रजाति के बीच में यह बहुत सामान्य स्वास्थ्य मुद्दा है। साधना ने महसूस किया कि उसके पशु चारा खाने से इनकार करते हैं और असहज भी होते हैं जो संभवतः कोलिक बीमारी के लक्षण भी हो सकते हैं। साधना अपने परिवार और समुदाय के साथ उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में रहती हैं। कन्नौज में लगभग 11 गाँव हैं जिनमें प्रत्येक गाँव में 200 अश्व प्रजाति के जानवर हैं। अश्व प्रजाति के

मेले में मौजूद बुक इंडिया स्टाफ ने साधना और उसके कुछ समुदाय के सदस्यों को रुक के मेडिकल कैम्प पर जाने की सलाह दी जिससे उसे उस पशु के स्वास्थ्य मुद्दों के विषय में बेहतर जानकारी प्राप्त हो।

appeared to be in pain, which were all indicative of symptoms of Colic.

Sadhna with her family and community stays in Kannauj district of Uttar Pradesh. There are about 11 villages in Kannauj with 200 equines in each hamlet. Our BI staff advised Sadhna and some of her community members to visit BI's camp and meet the doctors who will help them understand better about the health issues faced by their equines.

Such interactions help us to know more about the conditions on ground and conduct further research on the observations stated by community members themselves. Post this, possible actions are taken to help the deprived equines and their owners. ■

मेले में मौजूद बुक इंडिया स्टाफ ने साधना और उसके कुछ समुदाय के सदस्यों को रुक के मेडिकल कैम्प पर जाने की सलाह दी जिससे उसे उस पशु के स्वास्थ्य मुद्दों के विषय में बेहतर जानकारी प्राप्त हो।



## BI's Efforts in Building an Equine Friendly Policy Environment

- ◆ BI representatives met **Mr. Devendra N. Prajapati, President All India BK & Tile Mfg.** During this meeting, various issues and challenges regarding sustainable equine welfare at BK such as lack of clean drinking water, FAKs and need for separate toilets for women were discussed. Mr. Prajapati suggested building of model BKs demonstrating adequate infrastructure and required facilities for both the equines and their owners, who are workers in the BKs. These model brick kilns could serve as a benchmark for brick kilns owners to adopt.
- ◆ BI representatives met **Dr. Som Shekhar, Director of Animal Husbandry Department (AHDP-AP), State of Andhra Pradesh.** The purpose of this meeting was to discuss the possibility of collaboration between BI and AHDP-AP for conducting a training and seminar on themes such as Glanders, Equine Welfare, Handling and Management, and Equine Diseases and Treatment in Field Conditions, for AHDP-AP staff. This will help in upskilling the AHDP-AP staff and help them adequately handle equine related health issues and injuries in time of an emergency.
- ◆ BI representatives met **Dr M Markandeya, Associate Dean, Parbhani Veterinary College (PVC).** In the meeting, BI and PVC's possible collaboration was discussed. The collaboration will help BI in its endeavour to develop sensitivity and capacity in veterinary professionals concerning the working equids.
- ◆ BI representatives met **Dr A J Kachhiapatel, Director of HD, State of Gujarat (AHD-Guj).** The meeting was held to discuss the possibility of collaboration between BI field team and the AHD-Guj staff. The aim of this proposed collaboration is to seek support in inclusion of equines in the government cattle camps, make provisions of dewormer, mineral mixture for equine owners and train equine owners on various equine diseases, and their preventive measures and better husbandry practices.
- ◆ BI representatives met **Dr N. H. Kelawala, Vice Chancellor, Kamdhenu University.** The meeting aimed at a possible collaboration with the university to help BI in its endeavour to develop sensitivity and capacity in veterinary professionals concerning the working equids.
- ◆ BI representatives met **Dr. Amit Kanani, Deputy Director of AHD, (Disease Investigation Section), State of Gujarat** The main point of discussion was the spread of Glanders disease and its quick redressal. BI and AHD-Guj have a pivotal role to play in its prevention and spreading awareness among the equine owners and to the community at large ■

## Workshops for enhancing the role of Society for Prevention of Cruelty Against Animals (SPCA)

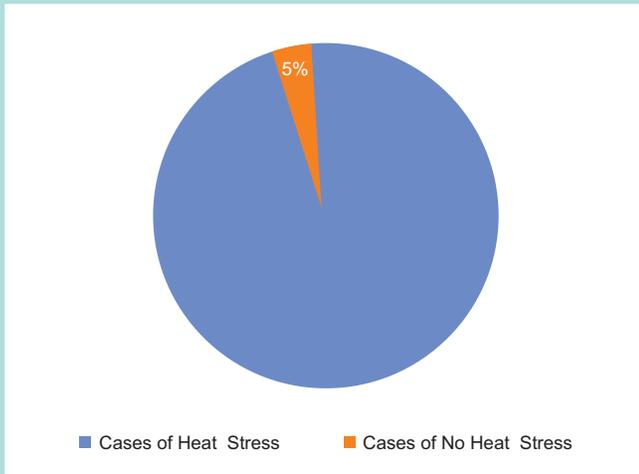
BI team organised two animal welfare workshops in Mandi (06-07-2019) and Chamba (23-08-2019) district of Himachal Pradesh. The workshops were organised in collaboration with the Partner Equine Welfare Unit, Environmental and Rural Awakening (ERA). The aim was to discuss the issues related to animal welfare, especially working equines, SPCA's role and developing an inclusive action plan to address equine welfare issues. Representatives from the State AHD, SPCA heads and staff, Veterinary officers and equine owners from the surrounding area participated in the workshop.

The discussions held during the workshop helped paving way for commitments, which are as under:

- Provision of help and treatment to the animal in case of accidents by the AHD.
- Extension of full cooperation by the AHD to SPCA.
- Provision of first aid facility to each equine owner through AHD's Veterinary Officers and Para vet staff.
- Provision of shelter to stray and abandoned equines.

The highlight of the workshop was the participatory spirit, solutions and commitments made by the AHD representatives ■

## BI Research



Heat stress has been anecdotally reported in equids across Indian brick kilns, but clinical records are often incomplete. Heat stress is an abnormal physiological state, occurring when the body cannot cool itself to maintain a healthy temperature. Clinical signs include tachypnoea, dyspnoea, depression, congested mucous membranes and potentially ending in death.

This study was planned to estimate the prevalence of equine heat stress in Indian brick-kilns and document owners' practices about its prevention and management. The prevalence of heat stress in equids employed in brick-kilns and associated owner beliefs and practices are documented in three districts from two climatic zones in India. About 339 equids were examined, 30 minutes after work and

categorized as having heat stress or not.

The results indicated 18 out of 339 equids were suffering from heat stress after 30 minutes of work. The numbers are low as compared to the previous similar studies. The researchers suggest that it could be possible as the study was conducted at the end of brick kiln season, and light rain helped in easing the environment for the equids. However, a large number were found to be extremely thirsty, therefore, it was advised to the owners to frequently provide water to them. The latter half of the study also suggests the avoidance of salt in heat and water for rehydration ■

## Trainings



Every year BI welcomes new Veterinary Assistant Community Motivators (VACMs). Training is a crucial component for BI's projects in order to achieve desired level of welfare amongst the equine, spread knowledge and enhance skills of owners as well as service providers.

It is paramount for staff to know about the tenets of animal welfare, humane handling and restraining, equine diseases preventive practices and correct husbandry practices. The training also supports to develop a common understanding among participants towards community led sustainable equine welfare programme, internalize 'work plan', and develop conceptual understanding as well as facilitation skills in application of Participatory Rural Appraisal (PRA)

tools, in equine welfare context, for community led planning, implementation & monitoring of activities for sustainable equine welfare ■

1661

Skill enhancement of the farriers

## Farewell to Brooke India's stalwart: Lt. Gen. Ashoke Kumar Chatterjee, PVSM, VSM, ADC (Retd.)



This year, with a heavy heart, we bid farewell to Lt. General Ashoke Kumar Chatterjee. The General officer is an Army Veteran who was commissioned in the SIKH LIGHT INFANTRY Regiment and retired as an Army Commander. After his retirement he took on onerous responsibilities in the realm of Animal Welfare and served as the Chairman of the Animal Welfare Board of India for several years. He then joined the Brooke as one of BI's founding members and was a guiding light to the organization since 1999. As a member of the Board of

Directors, he represented BI on various National and International fora till he decided to demit responsibilities in the BI Board in August 2019. His dedication and contribution towards the well-being of working equids will always be treasured. The working equines, the equine owning community and Global Brooke community will miss him and his stellar contributions ■

## Newspaper Coverages

### During monsoon fury, NDRF rescued over 15,000 horses, mules, donkeys

Sandeep Rai | Updated: Sep 4, 2019, 4:04 IST



Meerut: More than 15,000 equines (mules and horses) pressed into tourism business or carrying goods were rescued and treated in more than half a dozen states, including Himachal Pradesh, Uttarakhand, Uttar Pradesh, Gujarat and Maharashtra, during the monsoon that makes equines fall from slippery slopes in bad weather

condition, particularly in the hilly areas. The rescue operation was carried out by National Disaster Response Force with assistance from an NGO, Brooke India, an international animal welfare charity dedicated to improving the lives of working horses, donkeys and mules.

Brooke India reached out to the working equines during the monsoon fury

### In 7 yrs, Glanders has spread in equines of 17 states from just four

#### HORSES/MULES KILLED AFTER TESTING POSITIVE

There are 1,000 equines in the state of Karnataka, which are used for transport and other purposes. In the past few years, there has been a significant increase in the number of equines affected by Glanders. The disease is highly contagious and often fatal. It is caused by the bacterium Burkholderia mallei, which is found in the soil. The disease is spread by direct contact with the infected animal or by contact with its secretions. The symptoms of Glanders include fever, cough, and difficulty breathing. In severe cases, the disease can lead to death. The National Institute of Animal Health, Bangalore, is currently conducting research on the disease and its treatment. It is hoped that this research will lead to the development of a vaccine and other measures to prevent the spread of the disease.

Article published on BI's effort for generating Glanders awareness

## Voices from the Ground

"In brick kiln there were no sheds or trees to provide a little relief to our animals, but through the mass movement of plantation facilitated by Brooke India staff, we all got motivated and planted saplings around the brick kiln premises. We hope that this will solve our purpose of providing shelter in future" .

– Sriram, Equine Owner

मैं ब्रुक इंडिया की टीम का तहे दिल से शुक्रगुजार करता हूँ इन्हीं की वजह से मेरी घोड़ी रानी सर्रा जैसी बीमारी से बच गई और सेहतमंद है मैं और मेरा परिवार खुद को बहुत खुशकिस्मत समझते है जो हमें हमारी घोड़ी वापिस मिल गयी।

–शालामुद्दीन, घोड़ी मालिक

"I think I have been lucky that my donkey's life was saved on time. He is my only source of income. Earlier, I was scared to visit the university clinic, thinking that it will be a lot of trouble and very expensive".

– Geetaben Vanzara, Equine Owner, Vadodara

"हम ब्रुक इंडिया टीम को धन्यवाद करते है जिनहोने भट्टे पर मेडिकल और इन्श्युरेंस कैंप का आयोजन किया। इन कैंप की वजह से हमारे गधे अब सुरक्षित है, उनका बीमा और टीका करण हो जाने की वजह अब हम वित्तीय रूप से भी सुरक्षित महसूस करते है।"

–अशोक इबितदार और साईनाथ इबितदार, गधा मालिक



Brooke Hospital for Animals (India)

2nd floor, A Block, 223-226, Pacific Business Park, , Dr Burman Marg, Plot no 37/1, Site IV ,  
Sahibabad Industrial Area, Ghaziabad - 201010

Uttar Pradesh, India, Ph: +91 120 4151655, Fax: +91 120 4348955

Website: [www.thebrooke.org](http://www.thebrooke.org), E-mail: [mail@thebrookeindia.org](mailto:mail@thebrookeindia.org)